कर्मकाण्ड डिप्लोमा - वैदिक पौरोहित्य

(One year Diploma in Karmakand)

- समयावधि – एक वर्ष (दो सेमेस्टर)
- पात्रता –स्नातक / समकक्ष
- प्रश्नपत्र का स्वरूप – अतिलघु, लघु और दीर्घ उत्तरीय
- अंक विभाजन – 70% लिखित परीक्षा
- 30% आन्तरिक सतत मूल्यांकन

वेदविभाग

प्राच्यविद्या संकाय

गुरुकुल कांगडी (समविश्वविद्यालय) हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

2021

Diploma in Karmakand : Vaidika Paurohitya

Department of Veda

Syllabus (पाठ्यक्रम)

Ist Semester (प्रथम सेमेस्टर)

S.N.	Code	Title	Internal	Theory	Total	Page n.
1.	DVP-C101	नित्यकर्म	30	70	100	3
2.	DVP-C102	नैमित्तिक कर्म	30	70	100	4
3.	DVP-C103	संस्कार कर्म (क)	30	70	100	5
4.	DVP-C104	संस्कार कर्म (ख)	30	70	100	6
5.	DVP-C151	प्रयोगातमक	30	70	100	7

IInd Semester(द्वितीय सेमेस्टर)

S.N.	Code	Title	Internal	Theory	Total	Page n.
1.	DVP-C201	धर्म परिचय	30	70	100	8
2.	DVP-C202	योग एवं आयुर्वेद	30	70	100	9
3.	DVP-C203	यज्ञ विज्ञान	30	70	100	10
4.	DVP-C204	वेदांग ज्योतिष	30	70	100	11
5.	DVP-C251	प्रयोगात्मक	30	70	100	12

Syllabus, **Diploma in Karmakand : Vaidika Paurohitya** , Department of VEDA, GKV, Haridwar (w.e.f. 2021-22), CBCS Pattern

Diploma in Karmakand : Vaidika Paurohitya

Ist Semester (प्रथम सेमेस्टर)

नित्यकर्म

DVP-C101

[Total Marks : 100 = External 70+ Internal 30]

नोट- यह प्रश्नपत्र पाँच यूनिटों में विभक्त है। जिनमें से अतिलघु ,लघु और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे।

इकाई (Unit)-I	सन्ध्या- वैदिक (मुख्य) तथा पौराणिक (गौण)।
इकाई (Unit)-II	देवयज्ञ- वैदिक (मुख्य) तथा पौराणिक (गौण)।
इकाई (Unit)-III	पितृयज्ञ तथा अतिथियज्ञ- वैदिक (मुख्य) तथा पौराणिक (गौण)।
इकाई (Unit)-IV	बलिवैश्वदेवयज्ञ - वैदिक (मुख्य) तथा पौराणिक (गौण)।
इकाई (Unit)-V	गृह्यसूत्रों का संक्षिप्त परिचय (दैनिक कार्यों के संबन्ध में)।

सहायक ग्रन्थ-

- पञ्चमहायज्ञविधि - स्वामी दयानन्द सरस्वती , परोपकरिणी सभा अजमेर, राजस्थान।
- संस्कार विधि - स्वामी दयानन्द सरस्वती, सं. आचार्य राजवीर शास्त्री , आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट खारी बावली, दिल्ली।
- कर्मठगुरु – मुकुन्दवल्लभ , मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली।
- धर्मशास्त्र का इतिहास- पी.वी. काणे, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, उ.प्र.।
- क्यों? – माधवाचार्य एवं श्रीकण्ठशास्त्री , माधव विद्याभवन दिल्ली।
- नित्यकर्म विधि- सं. आचार्य राजवीर शास्त्री , आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट खारी बावली दिल्ली।
- नित्यकर्म विधि- पं. युधिष्ठिर मीमांसक, रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली सोनीपत, हरियाणा।
- वैदिकपाठ – डॉ. दिनेशचन्द्र शास्त्री दूरस्थ शिक्षा संकाय, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

Diploma in Karmakand : Vaidika Paurohitya

Ist Semester (प्रथम सेमेस्टर)

नैमित्तिक कर्म

DVP-C102

[Total Marks : 100 = External 70+ Internal 30]

नोट- यह प्रश्नपत्र पाँच यूनिटों में विभक्त है। जिनमें से लघु और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे।

इकाई (Unit)-I	व्यक्तिगत नैमित्तिक प्रसंग- जन्मदिन, विवाहतिथि(विभिन्न संस्कृतियों की परम्परा के साथ)।
इकाई (Unit)-II	सामाजिक पर्व- श्रावणी, दीपवली, होली, मकर-संक्रान्ति, नववर्ष।
इकाई (Unit)-III	सांस्कृतिक-ऐतिहासिक पर्व- रामनवमी, कृष्णजन्माष्टमी,बैशाखी, ज्ञानपञ्चमी ।
इकाई (Unit)-IV	प्रासंगिक एवं काम्यकर्म- व्यापार आरम्भ, वाग्दान, विद्यारम्भ(स्कूल प्रवेश), वाहन-स्वागत, पुत्रकामेष्टि, शालाकर्म (शिलान्यास, भूमिपूजन आदि)।
इकाई (Unit)-V	नैमित्तिक कर्मों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (संक्षेप में)

सहायक ग्रन्थ-

- **पञ्चमहायज्ञविधि - स्वामी दयानन्द सरस्वती , परोपकरिणी सभा अजमेर, राजस्थान।**
- **पर्वचन्द्रिका- आचार्य प्रेमभिक्षु, सत्यप्रकाशन, मथुरा उ.प्र. ।**
- **कर्मठगुरु – मुकुन्दवल्लभ , मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली।**
- **धर्मशास्त्र का इतिहास- पी.वी. काणे, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, उ.प्र.।**
- **क्यों? – माधवाचार्य एवं श्रीकण्ठशास्त्री , माधव विद्याभवन दिल्ली।**

Diploma in Karmakand : Vaidika Paurohitya

Ist Semester (प्रथम सेमेस्टर)

संस्कार कर्म (क)

DVP-C103

[Total Marks : 100 = External 70+ Internal 30]

नोट- यह प्रश्नपत्र पाँच यूनिटों में विभक्त है। जिनमें से लघु और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे।

इकाई (Unit)-I	प्राग्जन्म संस्कार- गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन।
इकाई (Unit)-II	जन्मोत्तर संस्कार-(I) जातकर्म, नामकरण(ग्रह-नक्षत्र ज्ञानसहित), निष्क्रमण।
इकाई (Unit)-III	जन्मोत्तर संस्कार-(II) अन्नप्राशन, मुण्डन(चौलकर्म),कर्णवेध।
इकाई (Unit)-IV	विद्यासंबन्धी संस्कार- उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन।
इकाई (Unit)-V	संस्कारों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि/इतिहास परिचयत्मक विवरण।

सहायक ग्रन्थ-

- **पञ्चमहायज्ञविधि - स्वामी दयानन्द सरस्वती , परोपकरिणी सभा अजमेर राजस्थान।**
- **आर्यपर्व पद्धति- तपोभूमि मथुरा उ.प्र.।**
- **कर्मठगुरु – मुकुन्दवल्लभ , मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली।**
- **धर्मशास्त्र का इतिहास- पी.वी. काणे, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ उ.प्र.।**
- **संस्कार विधि - स्वामी दयानन्द सरस्वती, सं. आचार्य राजवीर शास्त्री , आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट खारी बावली दिल्ली।**
- **संस्कार चन्द्रिका- डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, गोविन्द राम हासानन्द दिल्ली।**
- **पर्वचन्द्रिका- आचार्य प्रेमभिक्षु, सत्यप्रकाशन, मथुरा उ.प्र.।**
- **क्यों? – माधवाचार्य एवं श्रीकण्ठशास्त्री , माधव विद्याभवन दिल्ली।**
- **बृहदवकहडाचक्रम्- चौखम्बा दिल्ली।**

Diploma in Karmakand : Vaidika Paurohitya

Ist Semester (प्रथम सेमेस्टर)

संस्कार कर्म (ख)

DVP-C104

[Total Marks : 100 = External 70+ Internal 30]

नोट- यह प्रश्नपत्र पाँच यूनिटों में विभक्त है। जिनमें से लघु और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे।

इकाई (Unit)-I	संस्कारविधि- गृहस्थाश्रम प्रकरण।
इकाई (Unit)-II	विवाह संस्कार-(I) कर्मकाण्डपरक अध्ययन।
इकाई (Unit)-III	विवाह संस्कार-(II) वैश्विक परम्पराओं का अध्ययन।
इकाई (Unit)-IV	विवाहोत्तर संस्कार- वानप्रस्थ, संन्यास, अन्त्येष्टि।
इकाई (Unit)-V	संस्कारों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि/इतिहास परिचयत्मक विवरण।

सहायक ग्रन्थ-

- **पञ्चमहायज्ञविधि - स्वामी दयानन्द सरस्वती , परोपकरिणी सभा अजमेर, राजस्थान।**
- **आर्यपर्व पद्धति- तपोभूमि मथुरा उ.प्र.।**
- **कर्मठगुरु – मुकुन्दवल्लभ , मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली।**
- **धर्मशास्त्र का इतिहास- पी.वी. काणे, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ।**
- **संस्कार विधि - स्वामी दयानन्द सरस्वती, सं. आचार्य राजवीर शास्त्री , आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट खारी बावली दिल्ली।**
- **संस्कार चन्द्रिका- डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली।**
- **पर्वचन्द्रिका- आचार्य प्रेमभिक्षु, सत्यप्रकाशन, मथुरा, उ.प्र.।**
- **क्यों? – माधवाचार्य एवं श्रीकण्ठशास्त्री , माधव विद्याभवन दिल्ली।**
- **बृहदवकहडाचक्रम्- चौखम्बा दिल्ली।**

Diploma in Karmakand : Vaidika Paurohitya

Ist Semester (प्रथम सेमेस्टर)

प्रयोगात्मक

DVP-C151

[Total Marks : 100]

नोट- यह प्रश्नपत्र दो खण्डों में विभक्त है।

1. मुखपाठ अंक- 50

- संध्या के मन्त्र
- हवन के मन्त्र
- स्वतिवाचन के (1-15) मन्त्र
- शान्तिकरण के (1-14) मन्त्र
- विवाहप्रतिज्ञा के मन्त्र
- सप्तपदी के मन्त्र
- यज्ञोपवित, भोजन, स्नान आदि के मन्त्र
- पठित विषयों पर कम से कम पाँच व्याख्यान/प्रवचन

2. प्रयोगविधि अंक-50

नोट- प्रत्येक प्रश्नपत्र (1 से 4 तक) में यूनिट 1-4 में कुल तीन आन्तरिक विषय रहेंगे। जिनका ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य होगा। इनसे संबन्धित प्रश्न पूछे जायेंगे। आन्तरिक विषय इस प्रकार होगा।

1. **मन्त्रभाग (उच्चारण, स्मरण, अर्थ)**
2. **कर्मभाग (विविध प्रसंगों की पद्धति)**
3. **उपदेशभाग(प्रत्येक कर्म से प्राप्त होने वाले उपदेश तथा उन-उन क्रियाओं के रहस्यों के विचार)**

Diploma in Karmakand : Vaidika Paurohitya

IInd Semester (द्वितीय सेमेस्टर)

धर्म परिचय

DVP-C201

[Total Marks : 100 = External 70+ Internal 30]

नोट- यह प्रश्नपत्र पाँच यूनिटों में विभक्त है। जिनमें से लघु और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे।

इकाई (Unit)-I	रामायण और महाभारत का परिचय।
इकाई (Unit)-II	विभिन्न धर्मों का परिचय (धर्म का आदि स्त्रोत पुस्तक के आधार पर) ।
इकाई (Unit)-III	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका – वेदोत्पत्ति, वेदनित्यत्वविचार, वर्णाश्रमव्यवस्था।
इकाई (Unit)-IV	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सम्पूर्ण)।
इकाई (Unit)-V	मनुस्मृति (द्वितीय अध्याय) एवं गीता (द्वितीय अध्याय)।

सहायक ग्रन्थ-

- **संस्कृत शास्त्र मञ्जुषा – उदयशंकर झा चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ।**
- **धर्म का आदि स्त्रोत (Fountain Head of Religion) – गंगा प्रसाद चीफ जस्टिस**
- **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका - स्वामी दयानन्द सरस्वती, सं. आचार्य राजवीर शास्त्री , आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट खारी बावली दिल्ली।**
- **विशुद्ध मनुस्मृति – डॉ. सुरेन्द्र कुमार , आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट खारी बावली दिल्ली।**
- **श्रीमद् भगवद्गीता – सामर्पणभाष्य, गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझाल, मेरठ।**
- **आर्योद्देश्यरत्नमाला- स्वामी दयानन्द सरस्वती, सं. आचार्य राजवीर शास्त्री , आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट खारी बावली दिल्ली।**

Diploma in Karmakand : Vaidika Paurohitya

IInd Semester (द्वितीय सेमेस्टर)

योग एवं आयुर्वेद

DVP-C202

[Total Marks : 100 = External 70+ Internal 30]

नोट- यह प्रश्नपत्र पाँच यूनिटों में विभक्त है। जिनमें से लघु और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे।

इकाई (Unit)-I	पातञ्जल अष्टांगयोग परिचय।
इकाई (Unit)-II	दिनचर्या- प्रातः एवं रात्रि कालीन मन्त्र, दैनन्दिन जीवन।
इकाई (Unit)-III	शरीर-विज्ञान, शरीर-संरचना तथा अंगों के कार्य।
इकाई (Unit)-IV	नाडी ज्ञान(वात-पित-कफ)- दोषज्ञान एवं दोषनिवारण।
इकाई (Unit)-V	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका – उपासनाविषय, पुनर्जन्म, मोक्षविद्याविषय।

सहायक ग्रन्थ-

- **योगदर्शन (व्यासभाष्य)- आचार्य राजवीर शास्त्री , आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट खारी बावली दिल्ली।**
- **ब्रह्मचर्य सन्देश - डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली।**
- **ब्रह्मचर्य के साधन- स्वामी ओमानन्द सरस्वती- गुरुकुल झज्जर हरियाणा**
- **स्वस्थवृत विज्ञान – प्रो. रामहर्ष सिंह**
- **शरीर रचना विज्ञान – डॉ. मुकुन्द स्वरूप वर्मा**
- **नाड़ी तत्त्व दर्शन- श्री सत्यदेव वासिष्ठ**
- **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका - स्वामी दयानन्द सरस्वती, सं. आचार्य राजवीर शास्त्री , आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट खारी बावली दिल्ली।**

Diploma in Karmakand : Vaidika Paurohitya

IInd Semester (द्वितीय सेमेस्टर)

यज्ञ-विज्ञान

DVP-C203

[Total Marks : 100 = External 70+ Internal 30]

नोट- यह प्रश्नपत्र पाँच यूनिटों में विभक्त है। जिनमें से लघु और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे।

इकाई (Unit)-I	वेदी निर्माण - कुण्ड निर्माण पद्धति
इकाई (Unit)-II	यज्ञीय पात्र - पात्रों का सामान्य परिचय
इकाई (Unit)-III	यज्ञीय पदार्थ- गोघृत, ऋतु अनुकूल सामग्री(सुगन्धित, मिष्ट, पुष्टिकारक, औषधीय)
इकाई (Unit)-IV	रोग-चिकित्सा –मानसिक और शारीरिक(आधि-व्याधि), चिकित्सा का सामान्य परिचय, रोगोपयोगी यज्ञ-सामग्री का परिचय
इकाई (Unit)-V	पुत्रेष्टि, अतिवृष्टि और अनावृष्टि यज्ञ

सहायक ग्रन्थ-

- आर्यपर्व पद्धति – भवानीप्रसाद, हिन्डोन सिटी राजस्थान।
- यज्ञविमर्श – प्रो. रामप्रकाश , अनीता आर्ष प्रकाशन, पानीपत, हरियाणा।
- देवयज्ञ- फुन्दनलाल अग्निहोत्री, परोपकारी सभा, अजमेर, राजस्थान।
- यज्ञ-चिकित्सा - फुन्दनलाल अग्निहोत्री
- यज्ञ-विज्ञान – श्रीराम शर्मा (कासगंज , एटा), अमर स्वामी प्रकाशन विभाग गाजियाबाद
- यज्ञ-चिकित्सा – ब्रह्मवर्चस् शान्तिकुञ्ज हरिद्वार।
- संस्कार विधि - स्वामी दयानन्द सरस्वती, सं. आचार्य राजवीर शास्त्री , आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट खारी बावली दिल्ली।
- वैदिक संग्रहालयीयम्- वेद मन्दिर गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. हरिद्वा।

Diploma in Karmakand : Vaidika Paurohitya

IInd Semester (द्वितीय सेमेस्टर)

वेदांग ज्योतिष

DVP-C204

[Total Marks : 100 = External 70+ Internal 30]

नोट- यह प्रश्नपत्र पाँच यूनिटों में विभक्त है। जिनमें से लघु और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे।

इकाई (Unit)-I **पञ्चांग-** तिथि ,वार, नक्षत्र, योग और करण।
संकल्प-युग,कल्प,मन्वन्तर,संवत्सर,अयन, ऋतु,मास, पक्ष, दिवस, होरा, घटिका, पल....।

इकाई (Unit)-II **ऐतिहासिक सन्दर्भ-** भारत के प्रमुख मन्दिर और तीर्थ स्थान एवं 18 पुराणों का सामन्य परिचय।

इकाई (Unit)-III **मुहुर्त-** राशि,ग्रह,नक्षत्र,तिथि, तिथियों की संज्ञाए, लग्न।
अथर्ववेद सूक्त- 19.7-8, 19.47-50, 19.53-54

इकाई (Unit)-IV शतपथ ब्राह्मण- 2.1.2-3 के अनुसार-
नक्षत्र – नक्षत्र आधान फल मीमांसा।

इकाई (Unit)-V **फलित ज्योतिष-** एक समीक्ष।

सहायक ग्रन्थ-

- **भारतीय ज्योतिष- श्री नेमीचन्द शास्त्री**
- **कुण्डली विज्ञान- मीठालाल ओझा**
- **गणित ज्योतिष- श्री पण्डित पन्नालाल**
- **अथर्ववेद भाष्य- श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, गुजरात**
- **ज्योतिष तत्त्व- भाग 1 व 2 – प्रो. प्रियव्रत शर्मा (चण्डीगढ़)**
- **मुहूर्त चिन्तामणि चौखम्बा प्रकाशन दिल्ली**
- **ज्योतिष विवेक- आ. वेदव्रत मीमांसक आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट खारी बावली दिल्ली।**
- **संस्कृत शास्त्र मञ्जुषा – उदयशंकर झा चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।**

Diploma in Karmakand : Vaidika Paurohitya

IInd Semester (द्वितीय सेमेस्टर)

प्रयोगात्मक

DVP-C251

[Total Marks : 100]

नोट- यह प्रश्नपत्र दो खण्डों में विभक्त है।

1.मुखपाठ **अंक- 50**

- ऋत्विक्-वरण (संकल्पपाठ)
- स्वतिवाचन के (16-30) मन्त्र
- शान्तिकरण के (15-28) मन्त्र
- संगठन सूक्त के मन्त्र (ऋग्वेद- 10.191)
- प्रातःजागरण (ऋग्वेद- 7.41.1-5) एवं सायं कालीन शयन(यजुर्वेद- 36.1-5) मन्त्र
- पठित विषयों पर कम से कम पाँच व्याख्यान/प्रवचन

2.प्रयोगविधि **अंक-50**

नोट- प्रत्येक प्रश्नपत्र (1 से 4 तक) में यूनिट 1-4 में कुल तीन आन्तरिक विषय रहेंगे। जिनका ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य होगा। इनसे संबन्धित प्रश्न पूछे जायेंगे। आन्तरिक विषय इस प्रकार होगा।

1.मन्त्रभाग (उच्चारण, स्मरण, अर्थ)

2.कर्मभाग (विविध प्रसंगों की पद्धति)

3.उपदेशभाग(प्रत्येक कर्म से प्राप्त होने वाले उपदेश तथा उन-उन क्रियाओं के रहस्यों के विचार)